श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय

(केन्द्रीय – विश्वविद्यालय)

कुतुब सांस्थानिक क्षेत्र, नई दिल्ली -110016

द्वि –दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

तिथि : 19-20 फरवरी 2026

भारतीय ज्ञान-परम्परा में साहित्य, समाज और राजनीति का अन्त:सम्बन्ध

आयोजक

मानविकी विभाग

संरक्षक

प्रो. मुरलीमनोहर पाठक

कुलपति

सान्निध्य

प्रो. मीनू कश्यप

संकाय प्रमुख, आधुनिक विषय पीठ

आयोजन सचिव

प्रो. जगदेव कुमार शर्मा

आचार्य एवं अध्यक्ष, मानविकी विभाग

संयोजक

डॉ. अभिषेक तिवारी

सह आचार्य, मानविकी विभाग

सह-संयोजक

श्रीमती वन्दना शुक्ला

सहायक आचार्य, मानविकी विभाग

सह-संयोजक

डॉ. ब्रजेश कुमार मिश्र

सहायक आचार्य, मानविकी विभाग

पंजीकरण

राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभाग करने के लिए विश्वविद्यालय के मानविकी विभाग में ऑफलाइन/ ऑनलाइन पंजीकरण करना आवश्यक है|

पंजीकरण लिंक: https://forms.gle/9miuTqsE7GVGg9wZA

पंजीकरण शुल्क :

प्राध्यापक – 500

छात्र शोधार्थी -300

शोध पत्र हेतु निर्देश

इस राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोध पत्र वाचन हेतु विषय से सम्बंधित शोध प्रपत्र सादर आमंत्रित हैं | शोध पत्र विषय से सम्बंधित किसी उप शीर्षक पर 17 फरवरी 2026 तक ईमेल seminar.manviki@gmail.com पर प्रेषित करें|

नोट – प्रतिभागियों को अपने ठहरने की व्यवस्था स्वयं करनी होगी |

विषय की रूपरेखा

भारतीय ज्ञान-परम्परा विश्व की प्राचीनतम, समृद्ध और निरन्तर विकसित होने वाली बौद्धिक परम्पराओं में से एक है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें ज्ञान को जीवन से अलग किसी अमूर्त अवधारणा के रूप में नहीं देखा गया, वरन उसे समाज, नैतिकता, शासन और मानवीय व्यवहार के साथ गहराई से जोड़ा गया है। भारतीय चिन्तन में साहित्य, समाज और राजनीति तीन अलग-अलग क्षेत्र न होकर एक ही व्यापक ज्ञान-संरचना के अभिन्न अंग रहे हैं। यही कारण है कि भारतीय ज्ञान-परम्परा को समझने के लिए इन तीनों के अन्तःसम्बन्ध का अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है। भारतीय साहित्य इस ज्ञान-परम्परा का प्रमुख संवाहक रहा है। वेद, उपनिषद, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक, रामायण, महाभारत, पुराण, बौद्ध और जैन साहित्य सभी में समाज और सत्ता के प्रश्न किसी न किसी रूप में विद्यमान हैं। इन ग्रन्थों में न केवल आध्यात्मिक चिन्तन मिलता है, बल्कि सामाजिक व्यवस्था, राजधर्म, न्याय, कर्तव्य और लोककल्याण की अवधारणाएँ भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य भारतीय समाज और राजनीति के नैतिक आदर्श प्रस्तुत करते हैं, जहाँ राजा को प्रजा का सेवक माना गया है और शासन का लक्ष्य लोकमंगल बताया गया है। इस प्रकार साहित्य भारतीय राजनीतिक और सामाजिक चिंतन का प्रभावी माध्यम रहा है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से भारतीय ज्ञान-परम्परा समाज को एक जीवन्त और नैतिक इकाई के रूप में देखती है। वर्ण और आश्रम व्यवस्था, धर्म तथा कर्म का सिद्धान्त, पुरुषार्थ की अवधारणा धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष भारतीय सामाजिक चिन्तन के आधार रहे हैं। इन अवधारणाओं ने न केवल सामाजिक संरचना को दिशा दी, बल्कि साहित्य और राजनीति को भी गहराई से प्रभावित किया।भक्ति आन्दोलन के साहित्य में सामाजिक असमानताओं, जातिगत भेदभाव और धार्मिक आडम्बरों के विरुद्ध शक्त स्वर देखने को मिलता है, जो उस समय के समाज में परिवर्तन की चेतना को दर्शाता है। कबीर, रविदास, तुलसीदास और मीराबाई जैसे संत कवियों ने साहित्य के माध्यम से सामाजिक और नैतिक सुधार का कार्य किया है।

राजनीतिक चिंतन के क्षेत्र में भी भारतीय ज्ञान-परम्परा अत्यन्त समृद्ध रही है। कौटिल्य का *अर्थशास्त्र* भारतीय राजनीति विज्ञान का एक आधारभूत ग्रन्थ है, जिसमें राज्य, शासन, प्रशासन, कूटनीति और अर्थव्यवस्था का विस्तृत विवेचन मिलता है। मनुस्मृति और अन्य धर्मशास्त्रों में राजधर्म की अवधारणा मिलती है, जो राजा को न्याय, धर्म और लोकहित के प्रति उत्तरदायी ठहराती है, जिससे स्पष्ट होता है कि भारतीय राजनीतिक चिन्तन साहित्यिक और सामाजिक मूल्यों से गहराई से जुड़ा हुआ था।

आधुनिक काल में भी भारतीय ज्ञान-परम्परा का यह अन्तःसम्बन्ध निरन्तर बना रहा है। हिंदी और अंग्रेज़ी साहित्य में औपनिवेशिक शासन, राष्ट्रीय आन्दोलन, समाज-सुधार और स्वतंत्रता संग्राम की चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रेमचंद, मैथिलीशरण गुप्त और निराला जैसे हिंदी साहित्यकारों तथा टैगोर, अरविंद घोष और गांधी जैसे चिंतकों ने साहित्य और विचार के माध्यम से समाज और राजनीति को नई दिशा दी। महात्मा गांधी का राजनीतिक दर्शन भारतीय ज्ञान-परम्परा में निहित सत्य, अहिंसा और धर्म के सिद्धान्तों पर आधारित था जो साहित्य, समाज और राजनीति के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण है। समकालीन वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और सामाजिक परिवर्तन के युग में भारतीय ज्ञान-परम्परा की प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। आज जब समाज अनेक प्रकार की सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक चुनौतियों से जूझ रहा है, तब साहित्य, समाजशास्त्र और राजनीति विज्ञान के अन्तर्विषयक अध्ययन के माध्यम से भारतीय ज्ञान-परम्परा से संवाद स्थापित करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है। यह न केवल अतीत की समझ को गहरा करता है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए भी वैचारिक मार्गदर्शन प्रदान करता है।

अतः **भारतीय ज्ञान-परम्परा में साहित्य, समाज और राजनीति का अन्तःसम्बन्ध** विषय पर यह संगोष्ठी भारतीय चिंतन की समग्रता को समझने का एक गंभीर अकादमिक प्रयास है। यह संगोष्ठी साहित्यिक अभिव्यक्तियों, सामाजिक संरचनाओं और राजनीतिक अवधारणाओं के आपसी सम्बन्धो को उजागर करते हुए भारतीय ज्ञान-परम्परा की जीवन्तता और समकालीन उपयोगिता को रेखांकित करेगी। इस विमर्श के माध्यम से भारतीय बौद्धिक परम्परा की निरन्तरता को पुनः स्थापित करने तथा बहुविषयक अध्ययन को प्रोत्साहित करने की दिशा में एक सार्थक पहल की जा सकेगी।

उप-विषय

- भारतीय महाकाव्यों में समाज, सत्ता और राजनीति की अवधारणा
- रामायण और महाभारत में राजधर्म एवं लोककल्याण
- कौटिल्य का अर्थशास्त्र : भारतीय राजनीतिक चिंतन की आधारशिला
- मनुस्मृति और अन्य धर्मशास्त्रों में राज्य और सामाजिक व्यवस्था
- बौद्ध एवं जैन साहित्य में सामाजिक-राजनीतिक चिन्तन
- भक्ति साहित्य में सामाजिक चेतना और समता का विचार
- सन्त साहित्य और सामाजिक सुधार की परम्परा
- मध्यकालीन भारतीय साहित्य में सत्ता, धर्म और समाज
- आधुनिक हिंदी साहित्य में भारतीय ज्ञान-परम्परा का पुनर्पाठ
- औपनिवेशिक एवं उत्तर-औपनिवेशिक अंग्रेज़ी साहित्य में भारतीय चिन्तन
- भारतीय संविधान और प्राचीन भारतीय मूल्यों का अंतर्सम्बन्ध
- गांधीवादी चिंतन और भारतीय ज्ञान-परम्परा
- समाजशास्त्रीय दृष्टि से भारतीय परम्पराएँ और सामाजिक संरचना
- भारतीय ज्ञान-परम्परा में स्त्री, जाति और सामाजिक न्याय
- वैश्वीकरण के सन्दर्भ में भारतीय ज्ञान-परम्परा की समकालीन प्रासंगिकता
- Nationalism and Political Consciousness in Indian English Literature
- Power, Identity, and Resistance in Postcolonial English Literature
- Colonial Disruption and the Revival of IKS in English Literary Discourse
- Democracy, Globalization, and Politics in Contemporary Indian English Literature Decolonizing the Mind: Indian Knowledge System in Indian English Writing
- Tradition vs Modernity: IKS Perspectives in Postcolonial English Narratives
-

सम्पर्क

- **श्रीमती वंदना शुक्ला (समाजशास्त्र)- 9101126193**
- **डॉ. ब्रजेश कुमार मिश्र (राजनीति विज्ञान)- 9532199510**
- **डॉ. स्वेता यादव (समाजशास्त्र) – 9450178746**
- **डॉ. आलोक कुमार (राजनीति विज्ञान) – 8460931297**
- **डॉ. हिमानी शर्मा (अंग्रेजी)-9034310377**
- **डॉ नीरज भारद्वाज(हिंदी) -9350977005**
- **डॉ. प्रियंका मिश्रा(हिंदी) -7530988943**
- **श्रीमान चंद्रभूषण मिश्र- (8010548703)**